IJAER/ July-August 2012 /Volume-1/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

अनुसूचित जाति की महिलाओं के परिवार में प्रचलित संस्कारों का विश्लेषण : एक अध्ययन

शोध निर्देशिका
डॉ.आभा त्रिपाठी
सहा.प्रा. समाजशास्त्र
शास.स्नातको.कला एवं वाणिज्य महावि.
बिलासपुर (छ.ग.)

शोधार्थी
डॉ.अनिता पाण्डेय

विश्व में भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषताएं है । अशिक्षा तथा सदियों की परम्परा के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज गतिशीलता और परिवर्तन में अन्य समाजों की अपेक्षा रूढ़िवादिता माना जाता है । भारतीय संस्कृति सामान्य रूप से रूढ़ियों व परम्पराओं से जकड़ी रही है । भारतीय समाज अपने परम्परागत स्वरूप से परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रहा है ।

भारत में अनेक जन समुदायों का मिश्रण हुआ । इन प्रत्येक समुदाय में नारी वर्ग की स्थिति के स्तर भिन्न–भिन्न थे । इसमें कोई संदेह नहीं कि वैदिक आर्यो के बीच नारी की स्थिति इतनी ऊँची थी कि आज बीसवीं सदी में संस्कार का अधिक से अधिक सुसंस्कृत शब्द भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसने नारी को उतना ही ऊँचा स्थान प्रदान किया है ।

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसूचित जाति (सतनामी) के परिवारों में प्रचलित कुछ संस्कारों का विश्लेषण किया गया है ।

प्रचलित संस्कार

सधौरी संस्कार :

माता के गर्भ धारण करने पर महिला के माता पिता द्वारा सात माह बाद गर्भवती महिला को रोटी, सात प्रकार के पकवान, दूध व दही खिलाने का रिवाज है इसे सधौरी कहते है क्योंकि गर्भवती महिला को कई प्रकार की चीजें खाने की इच्छा होती है ।

जन्म संस्कार :

जब एक सतनामी महिला माँ बनती है तो वह लगातार दो दिनों तक बिना अन्न जल के रहती है । तीसरे दिन कॉके दिया जाता है वह एक प्रकार की जंगली लकड़ी होती है जो कांके की लकड़ी कहलाती है । चौथे दिन बड़े कांके दिया जाता है पांचवे दिन मुनगे की सब्जी या बड़ी के साथ भात दिया जाता है । तीसरे दिन के कांके में अपने सम्पूर्ण रिश्तेदारों को निमंत्रण दिया जाता है । प्रत्येक घर की महिलायें आती है, उनको भी कांके पिलाया जाता है । कांके लकड़ी के साथ गुड़ मिलाया जाता है । सोंठ, अजवाइन, नारियल भेला, लौंग, इलायची, बादाम तथा समस्त प्रकार के मेवा करायत की एक अलग से ठुढ़ही बांधी जाती है तथा छठी के दिन कांके की तरह समस्त परिवारों को भोजन कराया जाता है ।

अन्न ग्रहण :

बच्चे की उम्र पांच या सात माह होने पर मुंह जूठन का कार्यक्रम होता है जिसे प्रथम अन्न ग्रहण का दिन कहते हैं ।

बालक के पेट को आंकने की कुप्रथा :

बिना पढ़े लिखे लोगों में एक अंध विश्वास है कि बाल को रोग से बचाने के लिए पेट को हंसिया गर्म करके आंका जाता है । गर्म लोहे से आंकने पर बालक को बहुत तकलीफ होती है, कई बालकों को घाव हो जाता है ठीक से इलाज न हो पर बालक मर जाता है पढ़े लिखे लोगों ने इस कुप्रथा को बंद कर दिया है ।

नामकरण संस्कार :

सतनामियों मेंबालक के नामकरण के लिए कोई संस्कार नहीं किया जाता है । ज्यादातर नामकरण बालक के जन्म दिन के आधार पर जैसे पुत्र इतवारी, पुत्री इतवारा बाई, गहन मासे अघनी बाई भगवान के नाम पर गांव नाम पर, सोने चांदी के नाम पर, त्यौहारों के नाम पर जानवरों के नाम पर, रंग के आधार पर किसी भी दिन इच्छा अनुसार परिवार के सदस्यों या माता पिता द्वारा नामकरण कर दिया जाता है, ग्रह नक्षत्र पंचांग देखने की आवश्यकता नहीं होती है ।

जनेऊ संस्कार :

बालक को विवाह के समय जनेऊ धारण कराया जाता है एक परिवार में कोई न कोई गुरू अवश्य होता है । पुत्रों के विवाह के बाद सभी महिला पुरूषों को कान फुंकवाना, कंठी पहनना जरूरी होता है । इस दिन चौका, आरती, मंगल गीत का आयोजन होता है । घर को पुत्रवधु नये वस्त्र धारण कर गुरू के समक्ष जाकर सिर झुकाकर प्रणाम करती है गुरू द्वारा शिष्य के कान में मंत्र पढ़ा जाता है और मंत्र को कंठस्थ करने को कहत हैं । सभी स्त्री–पुरूषों को एक एक तुलसी की माला देते है । पुरूषों को जनेऊ धारण कराते हैं । इस प्रकार स्त्री पुरूषों को गुरूमुखी कहते हैं ।

समाज के विद्वान लोग गुरू मुखी व्यक्ति से भोजन ग्रहण करते हैं । मृत्यु संस्कार में जाने वाले व्यक्ति को नया जनेऊ पहनना अनिवार्य है क्योंकि वह मृत्यु संस्कार से अपवित्र माना जाता है ।

मृत्यु संस्कार :

संत गुरू घासीदास जी ने मृत्यु के उपरान्त दफनाने को कहा है । इसलिए मुर्दे को दफनाया जाता है । दफनाने के बाद पुरूष सदस्य तालाब की ओर चले जाते हैं एवं घर के सदस्य उरई घास लेकर तालाब में नहाते हैं । महिला एवं पुरूष के घाटों में उरई घास को किनारे में गाड़ देते हैं । आजकल समाज में मुर्दा जलाने का रिवाज है । तीन दिन में हड्डी बिनकर इसे गंगानदी या नदीतालाब में विसर्जित कर देते हैं । जिसमेंअधिक खर्च आता है इसलिए दफनाने का कार्य अधिक होता है ।

गुरूघासीदास के गुणगान करके गीत गाते हैं । महंत द्वारा नारियल फोड़ा जाता है । घर में बने हुए पकवान प्रसाद मिलाकर मृतक के लिए पहले निकाला जाता है एवं दोनों में भोजन पानी रखा जाता है । ऐसा अंध विश्वास है कि मृतक दसवें दिन दशकर्म को अवश्य आता है एवं भोजन करता है ।

मृत्यु भोज :

सतनामी जाति में अशिक्षा, अंधविश्वास होने के कारण मृतक परिवार को समाज में मृत्यु भोज देना अनिवार्य है । गरीब किसान इस कारण श्रद्धा से दब जाता है आजकल पढ़े लिखे लोग इसका विरोध कर रहे हैं । संत गुरू घासीदास जी ने इसका विरोध किया था । भोज में चांवल, दाल, सब्जी, बड़ा, रोटी, अरसा, बूँदी, लड्डू आदि खिलाया जाता है ।

मरघट में मठ बनाना :

जिस स्थान पर मृतक को दफनाया जाता है । उस स्थान पर ईट, पत्थर से तीन फुट ऊँचा मठ बनाने का रिवाज है । मठ को सफेद चूने से पुताई कर देते है जो दूर से दिखता है इसे मृतक के स्मति चिन्ह केरूप में माना जाता है ।

पेड़ लगाना :

मृतक के नाम से मरघट में पीपल, नीम, बरगद़ आदि के पेड़ लगाने का रिवाज है ।

भांचा या गुरू को दान :

दशकर्म के दूसरे दिन भांचा या गुरू को दान दिया जाता है । पुरूष के मृत्यु होने पर भांचा या गुरू को नये वस्त्र, छाता, रूपया, बछिया, धान, चांवल आदि दान में दिया जाता है ।

महिला की मृत्य होने पर भांची या गुरू पत्नी को नई साड़ी, ब्लाउज, चांवल, छाता, धान रूपये पैसे, जेवर गहने इत्यादि दान में दिया जाता है ।

भंगन या भाठ :

मृतक के दशकर्म के छह माह बाद भंगन या भाठ घर आते है अपने वाणी शब्द नाम से मृतक की आत्मा की शांति के लिए पाठ करते हैं, गाते बजाते हैं परिवार वाले इन्हें दान के रूप में सोने–चांदी के जेवर, धान–चावंल, रूपये पैसे, गाय, बछिया दान में देते हैं । दान पुण्य करने से आत्मा को शांति मिलती है, ऐसा अंध विश्वास है ।

बरसी :

सम्पन्न व्यक्तिएक वर्ष बाद बरसी करते हैं । बरसी में सगे संबंधियों को भोजन कराना पड़ता है । प्रतिवर्ष पितृ पक्ष में पितरों को पानी दिया जाता है । पिण्ड दान का कार्य ब्राम्हण द्वारा नहीं बल्कि स्वयं के द्वारा किया जाता है ।

लोक विश्वास एवं मान्यताएं

भूत–प्रेत, झाड़–फूॅक, जादू–टोना, तंत्र–मंत्र में विश्वास :

आज भी समाज के अधिकांश लोग अशिक्षित हैं अशिक्षित होने के कारण देवी, देवताओं, भूत–प्रेत, झाड़–फूॅक, जादू–टोना, तंत्र मंत्र में विश्वास करते हैं । सभी बीमारियों का इलाज झाड़–फूॅक, तंत्र–मंत्र से करना चाहते हैं । जादू टोना के नाम से आज भी लड़ाई होती है ।

गोदना :

सतनामियों में गोदना गोदवाने का रिवाज है । गोदना लड़की के माता पिता के द्वारा ससुराल भेजने से पहले गोदवाने की प्रथा है इससे शरीर में काले रंग का उभार हो जाता है जो बहुत कष्ट होता है । इस कुप्रथा को पढ़े लिखे लोगों ने समाप्त कर दिया है । अंधविश्वास एवं ईश्वर की पहचान के लिए महिलाएं मृत्यु उपरान्त अपने शरीर के साथ जाने के लिए गोदना गोदवाती है । सतनामी पूरे शरीर में एक साथ गुदवाते हैं ।

मितान एवं गिया बनाना :

किसी व्यक्ति से मन मिलने के कारण उसे मितान बना लिया जाता है । मितान बनाने के लिए बच्चों की संख्या बराबर होने पर भाईहोने पर एक ही नाम होने पर बना लिया जाता है । मितान बनाने के लिए पूरे सगे संबंधियों के बीच में महंत भंडारी एवं परिवार के बुजुर्ग व्यक्ति के समक्ष नारियल, नये कपड़े भेंट कर बनाया जाता है । परिवार में मितान का स्थान पुत्र के समान हो जाता है । पूरे सगे संबंधियों का जो भी रिश्ता हो मानने लगता है समाज में मितान का स्थान प्रमुख होता है एक के कई मितान हो सकते हैं । मितान को आदर देना पड़ता है । वह भी परिवार का एक सदस्य बन जाता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देसाई नीरा – भारतीय समाज में नारी मेकमिलन इंडिया लिमिटेड,नई दिल्ली 1982, पेज नं. 135
2. वारले सरयू प्रसाद – सतनाम एवं सतनाम धर्म सत्य ध्वज स्मारिका
3. भारद्वाज ए.एन. – प्राब्लम्स आफ शिडयूल्ड कास्ट्स एण्ड शिडयूल्ड ट्राइब्स इन इंडिया लाईट एण्ड लाईफ इन इंडिया
4. हट्टन जे.एन. – कास्ट इन इंडिया 1955 ।